+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(वर्ष भर का पुनरावलोकन)

(December 2024)

(Part II)

TOPICS TO BE COVERED

- भारत का भू-राजनीतिक दृष्टिकोण
- वर्ष 2024; भारत के सामरिक उदय का वर्ष

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत का भू-राजनीतिक दृष्टिकोण:

बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था के समक्ष चुनौतीपूर्ण स्थितियां:

- वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय संबंध एक निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं। संयुक्त राष्ट्र और ब्रेटन वुड्स द्वारा प्रस्तुत बहुपक्षीय व्यवस्था, शक्ति संतुलन में बदलाव की उभरती आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाई है। वैश्विक समुदाय आज संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के गतिरोध का सामना कर रहा है, जिसमें प्रमुख शक्तियां एक-दूसरे के खिलाफ खड़ी हैं।

- शांति बनाए रखने, युद्धों को रोकने या संघर्षों को शीघ्र समाप्त करने में बहुपक्षीय आदेश की विफलता ने मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी और मिनी-पार्श्व समूहों के माध्यम से बहु-संरेखण और बचाव की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया है। वैश्वीकरण 2.0 में, क्षेत्रीय और मध्य शक्तियां रणनीतिक स्वायत्तता, बहु-संरेखण और प्रतिस्पर्धी शक्तियों के साथ मुद्दा-आधारित साझेदारी के माध्यम से अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त कर रही हैं।

भारत के भू-राजनीतिक दृष्टिकोण के प्रमुख पहलू:

- भारत, एक जिम्मेदार प्रमुख शक्ति के सभी गुणों से संपन्न होने के बावजूद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य नहीं है।
- यह दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला लोकतंत्र है, इसे शांति स्थापना अभियानों में योगदान के साथ-साथ दुनिया भर के देशों को महामारी के दौरान वैक्सीन सहायता के लिए सम्मान मिला है। दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती एक बड़ी अर्थव्यवस्था होने के साथ, भारत कई लोगों के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में उभरा है।
- **प्रधानमंत्री के अनुसार भारत के दृष्टिकोण के कुछ प्रमुख पहलू:**

1. तीव्र तथा समावेशी आर्थिक विकास और सामाजिक सूचकांकों तथा महिला-पुरुष समानता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना,
2. संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए भारत की रक्षा तथा सुरक्षा क्षमताओं को मजबूत करना, सीमाओं से जुड़ी बुनियादी ढांचे का निर्माण करना तथा भारत के दूरदराज के हिस्सों में विकास को बढ़ावा देना, और
3. भारत की उत्पादकता तथा विनिर्माण क्षमताओं में सुधार करने और भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVC) में खुद को बेहतर ढंग से एकीकृत करने में

सक्षम बनाने के लिए, विशेष रूप से महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों में भागीदार देशों के साथ सहयोग करना।

- यह दृष्टिकोण भारत के उच्च विकास पथ को सुविधाजनक बनाने के लिए तीन अलग-अलग स्तरों- आंतरिक, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर आम सहमति विकसित करने पर आधारित है।

G20 की अध्यक्षता, भारत की भू-राजनीतिक दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण क्षण:

- भारत की G20 की अध्यक्षता उसके बाहरी जुड़ाव में एक महत्वपूर्ण क्षण था। यह कई प्रमुख संघर्षों और विरोधाभासों के साथ मेल खाता है।
- 2023 तक, यूक्रेन में चले लंबे युद्ध की राजनीति, महामारी की उत्पत्ति से आगे निकल गई है जिसने G20 प्रक्रिया को बर्बाद करने का खतरा पैदा कर दिया। 2020 में गलवान में हुई खूनी घटना के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत और चीन एक-दूसरे के खिलाफ थे।
- इन सभी बाधाओं के बावजूद, भारत ने एक सर्वसम्मत दस्तावेज के साथ G20 को अध्यक्षता सफलतापूर्वक संपन्न की, जिसने असंभावित खिलाड़ियों को आर्थिक विकास और संयुक्त राष्ट्र के 2030 तक के सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपनी ऊर्जा समर्पित करने के लिए एक साझा मंच पर ला दिया।

- भारत अपनी G20 अध्यक्षता के दौरान प्रमुख विकासात्मक चुनौतियों पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान वापस लाने में सफल रहा। भारत ने स्वास्थ्य सेवाओं, आपदा प्रबंधन, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और कई अन्य क्षेत्रों में अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ साझा करने की इच्छा व्यक्त की है।

भारत ने दुनिया को 'किंत्सुगी क्षण' प्रदान किया:

- भारत उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम विभाजन को दूर करने की क्षमता के साथ वैश्विक दक्षिण की एक विश्वसनीय आवाज के रूप में उभरा है।
- क्रमशः जुलाई और सितंबर, 2024 में रूस और यूक्रेन की प्रधानमंत्री मोदी की यात्राओं ने एक ऐसे देश के रूप में भारत की छवि को रेखांकित किया है जो शांति के लिए खड़ा है। रूस और यूक्रेन दोनों देशों की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी का संदेश एक समान था, कि ***"यह युद्ध का युग नहीं है, समाधान युद्ध के मैदान में नहीं पाया जा सकता है, और मतभेदों को बातचीत और कूटनीति के माध्यम से हल किया जाना चाहिए"***।
- वास्तव में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया को वास्तव में किंत्सुगी क्षण प्रदान किया है। यदि यूक्रेन और गाजा में लंबे युद्धों को बातचीत के माध्यम से हल किया

जा सकता है, तो भू-राजनीतिक दरार समय के साथ ठीक हो सकती हैं और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को हमारे समय की तत्काल चुनौतियों, विशेष रूप से आर्थिक सुधार और जलवायु कार्रवाई पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

भारत-चीन संबंध एक उलझी हुई वास्तविकता:

- 2024 ने कई मोर्चों पर भारत की ताकत की परीक्षा ली है। सीमा क्षेत्रों में कुछ घर्षण बिंदुओं पर चीन के साथ मतभेद बरकरार रहे, जबकि विदेश मंत्रालय और सशस्त्र बलों के स्तर पर बातचीत जारी रही। अंततः, भारत के धैर्य, दृढ़ता और दृढ़ रुख से, बातचीत में और जमीनी स्थिति दोनों में स्थिति में बदलाव आया। जून 2020 में गलवान में हुई घटना से पहले की तरह वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त बहाल करने का सफल समझौता एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- सभी बाधाओं के बावजूद चीन के साथ गतिरोध को दूर करने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की क्षमता एक और संकेत है कि जब विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की हिमायत की बात आती है तो भारत भी 'बातचीत पर चलने' में सक्षम है।
- स्पष्ट रूप से, तनाव में कमी और यथास्थिति की बहाली ने रूस के 'कजान' में हालिया ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हालिया बैठक का मार्ग प्रशस्त किया।

- भारत और चीन के बीच उच्च स्तरीय बातचीत की बहाली से दोनों पक्षों द्वारा अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय जुड़ाव फिर से शुरू करने के लिए अगले कदमों पर काम करने की संभावना भी खुल गई है।
- हालांकि दोनों देशों के मध्य कई मुद्दों: दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान, पत्रकारों की तैनाती, पर्यटन तथा उद्यमियों के लिए वीजा व्यवस्था और अधिक मौलिक रूप से भारत के 'आत्मनिर्भर भारत' निर्माण में चीनी प्रौद्योगिकियों और आपूर्ति श्रृंखलाओं की भूमिका का सवाल अभी भी अनुत्तरित है और भविष्य की गोंद में है।

भारत का पाकिस्तान के साथ एक स्थिर और प्रतिकूल संबंध:

- पाकिस्तान की आतंकवाद से दूर रहने की अनिच्छा के कारण पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध स्थिर और प्रतिकूल बने हुए हैं। केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में लोकतांत्रिक चुनावों ने क्षेत्र के विकास में एक नया अध्याय खोल दिया है, भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 को इतिहास में दर्ज कर दिया गया है।
- यदि पाकिस्तान आतंकवाद का उपयोग देश की नीति के साधन के रूप में करने से बचता है, तो इस भावना को अर्थ देना अभी भी संभव है कि भारत और पाकिस्तान को अतीत को दफनाना चाहिए और अच्छे पड़ोसियों के रूप में एक साथ रहना चाहिए।

भारत की 'पड़ोसी प्रथम नीति' की परीक्षा का समय:

- भारत की 'पड़ोसी प्रथम नीति' का उद्देश्य व्यापक क्षेत्र में आर्थिक विकास और वृद्धि को बढ़ाना देना है। समय के साथ पड़ोसी देशों में परिवर्तन अपरिहार्य है, जो उनकी परिस्थितियों से प्रेरित विशिष्ट राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गतिशीलता का परिणाम है। वे नई और अक्सर अप्रत्याशित चुनौतियां सामने लाएंगे जिससे उचित तरीके से निपटना होगा।
- अक्टूबर, 2024 में मालदीव के राष्ट्रपति मोइज़ु की भारत यात्रा के बाद मालदीव के साथ भारत के संबंध फिर से बेहतर स्थिति में आ गए है। मालदीव और विस्तारित पड़ोस में अन्य जगहों पर, बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और क्षमता निर्माण के लिए भारतीय विकल्प अन्य विकल्पों की तुलना में जोर पकड़ रहा है।
- बांग्लादेश में राजनीतिक उथल-पुथल चिंता का कारण है, विशेष रूप से हिंदू अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार और कट्टरपंथ तथा आगे सीमा पार फैलाव की संभावना। उल्लेखनीय है कि भारत की संवेदनशीलताओं पर ध्यान देना बांग्लादेश के हित में है, जिसमे अवैध प्रवास और पूर्वोत्तर में भारत के सामने आने वाली आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां भी शामिल है।

बहुपक्षीय संस्थानों में वास्तविक सुधारों का प्रधानमंत्री का आह्वान:

- उल्लेखनीय है कि सितंबर, 2024 में संयुक्त राष्ट्र में आयोजित 'भविष्य के शिखर सम्मेलन' में अपनी टिप्पणी में प्रधानमंत्री मोदी के 'उज्ज्वल वैश्विक भविष्य के लिए हमारी सामूहिक खोज में एक मानव-केंद्रित दृष्टिकोण' पर जोर देने से उम्मीद है कि वैश्विक स्तर पर अधिक आत्मनिरीक्षण को बढ़ावा मिलेगा।
- बहुपक्षीय संरचनाओं, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अव्यवस्था, तर्कसंगत नहीं है। वर्चस्व की राजनीति को आज छोटे से छोटे राष्ट्र भी खारिज कर रहे हैं। मनमानी और जबरदस्ती के लिए प्रतिरोध का निर्माण आवश्यक है, लेकिन यह राष्ट्रों को विकासात्मक लक्ष्यों से भटकाता है।
- इसके स्पष्ट दोषों के बावजूद, एक नई वैश्विक व्यवस्था को व्यवस्थित करना आवश्यक नहीं है। एक मौलिक पुनर्व्यवस्था से अभी तक अनदेखे पैमाने पर युद्ध और तबाही का अनुमान लगाया जा सकता है।
- यदि दुनिया संयुक्त राष्ट्र और उससे संबद्ध बहुपक्षीय संस्थानों में वास्तविक सुधारों के लिए भारत के आह्वान पर ध्यान दे, तो मौजूदा नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था (RBIO) को अधिक स्वीकार्यता मिल सकती है और यह समकालीन चुनौतियों का सामना करने में अधिक प्रभावी बन सकती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

डोनाल्ड ट्रम्प के निर्वाचन का भारत के लिए मायने:

- संयुक्त राज्य अमेरिका में नए राष्ट्रपति के पद पर डोनाल्ड ट्रम्प का निर्वाचन भारत के लिए नए अवसर और कुछ चुनौतियां लेकर आएगा।
- अच्छी बात यह है कि राष्ट्रपति ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच बहुत अच्छा तालमेल है, जो दोनों देशों के बीच रिश्ते के लिए अच्छा संकेत है। राष्ट्रपति ट्रंप के पिछले कार्यकाल को देखते हुए, आतंकवाद, महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में व्यवधान सहित प्रमुख सुरक्षा चुनौतियों पर दोनों देशों के बीच एकरूपता है। इस अभिसरण के और अधिक गहरा होने की संभावना है।
- दूसरी ओर, भारत को अपने निर्यात पर शुल्क लगाने और अमेरिकी उत्पादों के लिए शुल्क कम करने की मांग पर किसी भी नए फोकस को सावधानी से टालना होगा। H1B वीजा और सख्त अमेरिकी आव्रजन नीतियों के सवाल पर कुछ हंगामा होना तय है।
- यदि राष्ट्रपति ट्रंप यूक्रेन और गाजा में युद्ध समाप्त करने में सफल हो जाते हैं, तो यह भारत को प्रतिस्पर्धी पक्षों के सामने अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' को उचित ठहराने के बोझ से मुक्त कर देगा।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत के भू-राजनीतिक दृष्टिकोण का आगे का रास्ता:

- अनिश्चितताएं जारी रहने के बावजूद, भारत अपनी बाहरी गतिविधियों में अधिक आत्मविश्वास के साथ 2025 में प्रवेश करेगा। भारत की गतिशील और व्यावहारिक विदेश नीति वैश्विक मंच पर इसके बढ़ते कद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- प्रमुख रणनीतिक साझेदारों, विशेषकर अमरीका के साथ मिलकर काम करना, जबकि पड़ोसियों, विशेषकर चीन के साथ स्थिर संबंध बनाए रखना, इस नीति के केंद्र में है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

वर्ष 2024; भारत के सामरिक उदय का वर्ष:

परिचय:

- 1947 से, दुनिया में अपना उचित स्थान बनाने के बाद, भारत क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख इकाई के रूप में उभरा है। भारत का वर्तमान उदय तीव्र और निरंतर आर्थिक विकास और राजनीतिक स्थिरता के कारण है, जो इसकी बढ़ी हुई क्षमताओं के समय पर विकास द्वारा संभव हो सका है।
- भारत ने अपनी क्षमताओं का विकास करते हुए आत्मनिर्भरता पर मजबूत ध्यान केंद्रित करके विकास को अपनाया है और हमेशा अपनी 'कार्यनीतिक स्वायत्तता' को बनाए रखा है और सुनिश्चित किया है, जो इसके समग्र घरेलू, क्षेत्रीय और वैश्विक पहुंच को परिभाषित करता है।

- भारतीय अनुसंधान और विकास क्षमताओं ने 2024 में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारत का रक्षा उत्पादन 2014-15 से 174 प्रतिशत बढ़कर रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

- वैश्विक दक्षिण में भारत का स्वाभाविक उदय इसकी समावेशी पहलों जैसे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट और G20 में अफ्रीकी संघ की सदस्यता के लिए प्राप्त जैविक समर्थन से चिह्नित है।
- भारत ने वैश्विक विश्व व्यवस्था में संतुलन स्थापित किया है, स्वतंत्रता, खुलेपन, पारदर्शिता और नियम-आधारित व्यवस्था का दृढ़ता से समर्थन किया है। जिम्मेदारी की इसकी समावेशी भावना ने वास्तव में विकासशील दुनिया में अंतर पैदा किया है। इसका असर घरेलू, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर देखने को मिल रहा है, जिससे भारत वैश्विक क्षितिज पर एक उज्ज्वल स्थान के रूप में उभर रहा है।

नवाचार, आर्थिक एवं वैश्विक परिदृश्य में भारत का बढ़ता प्रभाव:

- उल्लेखनीय है कि एक दशक की छोटी-सी अवधि में 'फ्रेजाइल फाइव' अर्थव्यवस्थाओं से दुनिया की शीर्ष 5 अर्थव्यवस्थाओं तक भारत की परिवर्तनकारी यात्रा क्षमताओं के विकास की गाथा है। मॉर्गन स्टेनली, जिसने कभी भारत को 'फ्रेजाइल फाइव' के रूप में वर्गीकृत किया था, ने भारत के विकास और परिवर्तनकारी सुधारों की सराहना की है, जिसने भारत को एक अग्रणी अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय निवेश के लिए एक उज्ज्वल स्थान बना दिया है।

- भारत ने ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (GII) रैंकिंग में जबरदस्त प्रगति की है, जो 2015 में 81वें स्थान से बढ़कर 2024 में 39वें स्थान पर पहुंच गया है। यह एक मजबूत नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता का पुरजोर समर्थन करता है।
- वित्तीय क्षेत्र में इस परिवर्तन का उत्कृष्ट उदाहरण यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) है, जो अक्टूबर, 2024 के महीने में लगभग +279.4 अरब डॉलर के 16.58 अरब लेनदेन के साथ रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया।
- रक्षा उत्पादन 2014-15 में 46,429 करोड़ रुपये से लगभग 174 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्शाते हुए 1,27,265 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। भारत का रक्षा निर्यात अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है, जो वित्त वर्ष 2013-14 में 686 करोड़ रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में 21,083 करोड़ रुपये हो गया है, जो पिछले एक दशक में निर्यात मूल्य में 30 गुना से अधिक की उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है।
- यह पैमाना और परिवर्तनकारी संचालन बंदरगाहों की वैश्विक रैंकिंग में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहां भारत के 9 प्रमुख बंदरगाह विश्व बैंक द्वारा वैश्विक शीर्ष

100 में हैं। इन बंदरगाहों में विशाखापट्टनम बंदरगाह और मुंद्रा बंदरगाह दुनिया के शीर्ष 30 बंदरगाहों में शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि मीडियन टर्नअराउंड टाइम (MTT) बंदरगाह परिचालन की दक्षता निर्धारित करने वाले प्रमुख पहलुओं में से एक है। भारतीय बंदरगाहों के लिए MTT 20वीं सदी के निष्क्रिय 28 दिनों से 2024 में 0.9 दिनों तक प्रभावी रूप से सुधर गया है, जो कुशल बंदरगाह प्रबंधन और भारत की क्षमता को दर्शाता है। वर्तमान में, MTT अमेरिका में 1.5 दिन, ऑस्ट्रेलिया में 1.7 दिन और सिंगापुर में 1 दिन है।

- इन उपलब्धियों ने भारत को दुनिया के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए रणनीतिक गठबंधनों के लिए एक पसंदीदा वैश्विक गंतव्य प्रदान किया है। भारत ने भी 'डिजिटल इंडिया', 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)', 2023 के G-20 शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली में 'NMFT' के लिए एक स्थायी सचिवालय की स्थापना का प्रस्ताव और नई दिल्ली में इंटरपोल महासभा 2022 की मेजबानी आदि जैसी विभिन्न नीतिगत पहलों के माध्यम से इस क्षेत्र में निर्णायक भूमिका निभाने के अपने इरादे को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत का उत्थान 'पड़ोसी प्रथम' और विस्तारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र को प्राथमिकता देने की दृढ़ नीति द्वारा निर्देशित:

- भारत का उत्थान अपने निकटतम पड़ोसी और विस्तारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र को प्राथमिकता देने की दृढ़ नीति द्वारा निर्देशित है। इसका प्रभाव क्षेत्र पश्चिम की ओर और बढ़ गया है, जो खाड़ी देशों के साथ गहन रूप से जुड़ रहा है, जिससे वे भारत के शीर्ष व्यापार, निवेश और ऊर्जा साझेदार बन गए हैं।
- भारत का महत्वाकांक्षी 'भारत मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)' इस क्षेत्र के सभी हितधारकों की रुचि आकर्षित करता है जो भारत को अरब प्रायद्वीप के माध्यम से यूरोप से जोड़ता है और समुद्री शिपिंग को काफी कम कर सकता है।
- भारत ने उत्तर में मध्य एशियाई राज्यों और दक्षिण में हिंद महासागर क्षेत्र के साथ अपनी भागीदारी को समान रूप से तेज किया है।
- अफ्रीका के साथ पश्चिम की ओर जुड़ाव अपने चरम पर है, विशेष रूप से पूर्वी अफ्रीकी तटरेखा पर।
- इसके अलावा, भारत का समावेशी दृष्टिकोण 'अंतरराष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC)' की प्रगतिशील पहल में देखा जा सकता है। जो यूरेशिया और उससे आगे तक पहुंचने के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में उभरा है।

- वैश्विक दक्षिण में भारत का स्वाभाविक उदय इसकी समावेशी पहलों जैसे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट और G20 समूहों में एक सामूहिक इकाई के रूप में अफ्रीकी संघ की सदस्यता के लिए प्राप्त जैविक समर्थन से चिह्नित है।
- वैक्सीन इक्विटी के प्रति भारत की नेतृत्वकारी भूमिका और मजबूत वकालत की दुनिया भर के देशों ने काफी प्रशंसा की है। भारत ने 2023 तक दुनिया के 99 देशों में कोविड-19 टीकों की 30.1 करोड़ से अधिक खुराक की आपूर्ति की है।
- भारत द्वारा प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) को बहुत समर्थन मिला है और 119 देशों ने ISA ढांचे पर हस्ताक्षर किए हैं और 99 देशों ने अगस्त 2024 तक ISA ढांचे के समझौते की पुष्टि की है।
- भारत ने मेजबान देशों की आवश्यकताओं के अनुसार बुनियादी ढांचे और विभिन्न परियोजनाओं के विकास के लिए विभिन्न देशों को लगभग 3 अरब डॉलर की धनराशि प्रदान की है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत एक 'शुद्ध सुरक्षा प्रदाता':

- एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में, भारत हिंद-प्रशांत के भू-रणनीति में एक 'शुद्ध सुरक्षा प्रदाता' के रूप में विकसित हुआ है। इस उपलब्धि ने हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी बढ़ती क्षमताओं, निरंतर परिचालन अनुभव और सक्रिय भूमिका को बढ़ाया

है। यह वास्तव में हिंद महासागर को 'भारत का महासागर' बनाने के कार्टोग्राफिक तथ्य की सराहना करता है।

- यह समुद्र में 'ग्रेट गेम' से मिलते-जुलते समुद्री और नौसैनिक प्रवचन की विकसित गतिशीलता को संदर्भित करता है। विभिन्न बाहरी कार्यकर्ताओं के बीच बढ़ती नौसैनिक संलग्नता हिंद-प्रशांत के भू-रणनीति और वैश्विक आर्थिक विकास और रणनीतिक धुरी के गुरुत्वाकर्षण केंद्र के रूप में भारत के बढ़ते महत्व की व्यापक मान्यता को रेखांकित करती है।
- समुद्री क्षेत्र में अपनी ताकत को मजबूत करने के साथ-साथ, हाल के दिनों में भारतीय निवारक क्षमताएं भी निर्णायक रूप से विकसित हुए हैं। भारत ने अपने दूसरे SSBN INS अरिघाट के कमीशन के साथ अपनी निवारक क्षमताओं को मजबूत करते हुए अपने परमाणु ट्रायोड को मजबूत किया है। भारत ने विशाखपट्टणम में अपनी चौथी SSBN पनडुब्बी लॉन्च की।

भारत की अध्यक्षता में 2 प्रमुख सैन्य अभ्यासों का आयोजन:

- व्यापक अंतर-संचालन कौशल और क्षमताओं के साथ अपने कार्यनीतिक क्षितिज को व्यापक बनाते हुए, भारत की अध्यक्षता में 2 प्रमुख अभ्यासों ने न केवल भारत की सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया है।

मिलन 2024:

- पहला अभ्यास भारत के पूर्वी नौसेना कमान के नेतृत्व में मिलन 2024 नामक एक मेगा द्विवार्षिक अभ्यास है जो 19 फरवरी, 2024 से 27 फरवरी, 2024 तक विशाखपट्टणम में आयोजित किया गया। इस अभ्यास में 6 महाद्वीपों, 51 देशों, 35 जहाजों, 50 विमानों की अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी हुई और 11 समुद्री एजेंसियों के प्रमुखों ने भाग लिया।
- वर्ष 1995 में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में चार नौसेनाओं की भागीदारी के साथ शुरू होने के बाद से मिलन 2024 अभ्यास परिचालन आकार और मिशन की जटिलता दोनों के संदर्भ में विकसित हुआ है।

'तरंग शक्ति 2024':

- भारतीय वायु सेना ने अपना पहला बहुराष्ट्रीय अभ्यास, 'तरंग शक्ति 2024' आयोजित किया, जिसका शाब्दिक अर्थ है शक्ति की लहरें। दिनांक 06 अगस्त, 2024 से 14 अगस्त, 2024 तक चलने वाले इस अभ्यास का उद्देश्य मित्र देशों (FFC) के बीच अंतर-संचालन और परिचालन समन्वय को बढ़ाना था।
- कुल 51 देशों ने ग्रह के सभी महाद्वीपों में फैले अपने सामरिक संसाधनों को तैनात किया है। भारतीय वायु सेना के तत्वाधान में मेगा बहुराष्ट्रीय अभ्यास में F/A-18

सुपर हॉर्नेट, फ्रेंच राफेल, यूरोपियन टाइफून, F-35 जैसी अत्याधुनिक तकनीकी रूप से उन्नत नीतिक परिसंपत्तियों ने भारतीय वायुसेना के LCA तेजस, सुखोई-30 MKI, राफेल, मिराज 2000, जगुआर के साथ-साथ LCH प्रचंड, ALH MK-IV रुद्र, C-130, नेत्र और फाल्कन अवाक्स (एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल) ने हिस्सा लिया, जिन्हें आमतौर पर अभ्यास के लिए विदेश में तैनात नहीं किया जाता है।

- इसने भारत की उन्नत क्षमताओं को प्रदर्शित किया है जो हिंद-प्रशांत के भूरणनीति में विकसित हो रहे उभरते खतरों और सुरक्षा चुनौतियों के लिए त्वरित प्रतिक्रिया और अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करती हैं।

भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को मजबूती देता है:

- जैसा कि वैरी बुज़न ने निर्धारित किया है, राजनीति, अर्थशास्त्र और भौगोलिक विकास के बीच का अंतर मानव सुरक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है जो पांच प्रमुख घटकों से प्रमुखता से प्रभावित है, और जिनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट योगदान होता है, भले ही उसकी प्राथमिकताएं कुछ भी (बुजन, 1991) हों-

1. सैन्य-यह राज्यों की सशस्त्र साख और एक दूसरे के इरादों के बारे में राज्यों की धारणाओं के बीच का अंतरसंबंध है। यहां हम इसे अनावश्यक भ्रम से बचने के लिए रणनीतिक पहलू के रूप में संदर्भित करते हैं।

2. **राजनीतिक**-राज्यों का संगठनात्मक क्रम, सरकार की व्यवस्थित व्यवस्था और उनकी वैध पहचान वाली विचारधाराएं।
3. **आर्थिक**-संसाधनों, वित्त और उन तक पहुंच की उपलब्धता तथा कल्याण राज्य प्राधिकरण के स्वीकार्य स्तर को बनाए रखने के लिए मार्कर है।
4. **सामाजिक**-राज्य की स्थिरता और पारंपरिक भाषा पैटर्न, संस्कृति और धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान और रीति-रिवाजों का विकास।
5. **पर्यावरण**-यह स्थानीय और ग्रहीय जीवमंडल के रखरखाव से संबंधित है क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण समर्थन प्रणाली है जिस पर पूरी मानव जाति निर्भर करती है।

- उपर्युक्त सभी पांच तत्वों में स्थिर विकास के साथ भारत का व्यापक विकास भारत को दुनिया भर में एक पसंदीदा भागीदार बनाता है, जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को मजबूती देता है।
- भारत ने वैश्विक विश्व व्यवस्था में एक संतुलन स्थापित किया है, जो स्वतंत्रता, खुलेपन, पारदर्शिता और नियम-आधारित व्यवस्था का दृढ़ता से समर्थन करता है। इस रेस्पोंसिबल आउटरीच ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसने भारत को दुनिया भर में एक 'प्रथम प्रतिक्रियादाता' और 'पसंदीदा सुरक्षा साझेदार' बना दिया है।